अध्याय – 5: भारतीय परिधानों के स्वरूप (पैटर्न) का निर्माण

5.1 भारतीय परिधान

पारंपरिक रूप से भारतीय महिलाएं साड़ी, सलवार कमीज, कलीदार कुर्ता कुर्ता सूट या लहंगा चोली पहनती हैं। यहां तक कि बड़े महानगरों में भी, अधिकांश महिलाएं त्योहारों और शादियों जैसे विशेष अवसरों के लिए पारंपरिक भारतीय परिधान पसंद करती हैं। हालांकि, सभी शहरों में महिलाओं की पर्याप्त संख्या काम पर जाने और दैनिक उपयोग दोनों के लिए दैनिक आधार पर इन्हें पहनती हैं। छोटे शहरों और ग्रामीण भारत की महिलाएं सभी प्रयोजनों के लिए इन्हें पहनती हैं। महिलाओं की पोशाकों की डिजाइन बनाने वाले भारतीय डिजाइनरों के पास, हमेशा पोशाकों की एक श्रृंखला रहती है भले ही वे मुख्य रूप से पश्चिमी परिधानों, अधोवस्त्र और रिसॉर्ट पहनावों पर काम करते हों।

भारत में श्रम के बहुतायत के **कारण तथा** साड़ी से धोती तक लपेटे जाने वाले वस्त्रों की परंपरा के साथ जुड़े होने के कारण, पोशाकों का पैटर्न बनाने के कौशल में वैश्विक मानक के तरीके और गति के अनुसार विकास नहीं हुआ। भारतीय पैटर्न निर्माताओं को सीधे (ड्राफ्ट) मसौदा तैयार करने की कला में महारत हासिल है। परंपरागत रूप से साड़ी ब्लाउज, चोली ब्लाउज, कमीज, कलीदार कुर्ता, सलवार या चूड़ीदार पायजामा आदि भारतीय वस्त्र सीधे मसौदा तैयार करने की विधि द्वारा काटे जाते हैं।

मसौदा तैयार करने की प्रत्यक्ष विधि में नमूने (पैटर्न) अलग–अलग व्यक्तियों की माप के लिए काटे जाते हैं। ब्लॉक विधि में नमूनों (पैटर्न) को मानक माप तालिका का अनुसरण करते हुए, उदाहरण के लिए वक्ष के 34 या 36 इंच के आकार के लिए तैयार किया जाता है और फिर विभिन्न डिजाइनों को बनाने के लिए उन्हें अनुकूलित किया जाता है। जबकि, प्रत्यक्ष मसौदा तैयार करने की विधि में एक व्यक्ति की

माप ली जाती है और एक विशेष डिजाइन के एक पैटर्न के लिए व्यक्ति की माप के अनुसार ड्राफ्ट तैयार किया जाता है। अधिकतर, इसे विशेषज्ञ दर्जी द्वारा सीधे अंतिम कपड़े पर ही तैयार किया जाता है, भारत भर में दर्जी की दुकानों पर इसे देखा जा सकता है।

रितु बेरी द्वारा निर्मित परिधान

दोनों ही तरीकों के अपने–अपने फायदे और नुकसान हैं, ब्लॉक विधि पहनने के लिए (आरटीडब्ल्यू) तैयार वस्त्रों के बाजारों के लिए एक वरदान है, बड़े ब्रांडों की आरटीडब्ल्यू परिधान श्रृंखला केवल ब्लॉक विधि के माध्यम से ही संभव हो सकती है। वैश्विक फैशन उद्योग पैटर्न बनाने के लिए ब्लॉक पद्धति का अनुसरण करता है, क्योंकि ब्लॉक विधि के माध्यम से मानक आकार के लिए पैटर्न को काटना आसान है, समय की बचत होती है इस प्रकार दुबारा फिटिंग की जाँच करने की जरूरत नहीं है, इससे पैसे की बचत होती है और मानक ब्लॉक में नमूनों को जमा करना आसान है। सबसे जटिल नमूनों (पैटर्न) के लिए कई आकारों में ग्रेडिंग भी संभव है। हालांकि, परिधान की फिटिंग एक बड़ा मुद्दा है, क्योंकि मानक माप चार्ट एक देश की पूरी आबादी को पांच से सात आकारों में बांटता है, यह एक ज्ञात तथ्य है कि किन्ही दो मनुष्यों की दैहिक संरचना समान नहीं होती है । प्रत्यक्ष ड्राफ्टिंग विधि सुनिश्चित करती है कि परिधान व्यक्ति विशेष की माप के अनुरूप है और यह उचित फिटिंग यह सुनिश्चित करता है, जिससे सबसे जटिल डिजाइन के लिए भी फिटिंग की जाँच की आवश्यकता नहीं पड़ती है। व्यक्ति की आकृति रखते हुए परिधानों को तैयार किया जा सकता है और इस पद्धति में अलग–अलग स्टाइल में ब्यौरा बनाना संभव है। दोनों तरीके एक दूसरे के विपरीत हैं, एक के फायदे दूसरी विधि के दोष हैं।

सलवार, चूड़ीदार पायजामा और कलीदार कुर्ता के बारे में एक दिलचस्प तथ्य है कि दोनों लिंग के लिए कपड़े को काटने की विधि एक समान है, जिसमें व्यक्ति की माप के लिए आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं। आज भी ये तीनों वस्त्र, पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा पहने जाते हैं, हालांकि अब सलवार केवल कुछ समुदायों के पुरुष पहनते हैं।

5.2 साड़ी ब्लाउज के विभिन्न प्रकार

साड़ी के साथ पहने जाने वाले ऊपरी परिधान को साड़ी ब्लाउज कहा जाता है, इसकी अनूठी विशेषता है कि यह शरीर पर एक दूसरी त्वचा की तरह फिट बैठता है। जीवन के सभी क्षेत्रों की महिलाओं द्वारा व्यापक रूप से इसका इस्तेमाल किया जाता है, यह साड़ी के ही

रंग के एक बुनियादी रूप में हो सकता है। यह अलग रंग, विपरीत रंग का हो सकता है और यहां तक कि एक बयान बनाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

5.2.1 ब्लाउज का विवरण

आम तौर पर साड़ी ब्लाउज के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा 2X2 रुबिया है, इस कपड़े में कुछ खिंचाव निहित है। अगर ब्लाउज अस्तर के साथ रेशमी कपड़े पर या मोटे सूती कपड़े पर काटा जा रहा हो, तो वक्ष और कमर के स्तर पर पर्याप्त बढ़त जोड़ी जानी चाहिए। साड़ी ब्लाउज में विभिन्न प्रकार के गले बनाना संभव है। साड़ी ब्लाउज में खोलने का एक भाग होता है जो ब्लाउज के सामने या पीठ पर हो सकता है। महिलाओं के इस कपड़े में खोलने वाला हिस्से का दाहिना भाग बाएं भाग पर अतिव्याप्त (ओवरलैप) होता है। पहनावे का खुलने वाला बायां हिस्सा 3/4 इंच तक बड़ा होता है और दाहिना हिस्सा पूरी तरह से अंदर मुड़ा रहता है

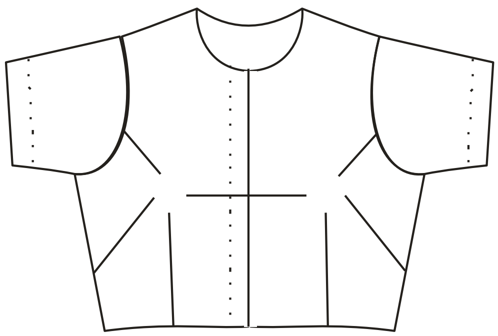

रितु बेरी द्वारा तैयार परिधान

5.3 गले रहित एवं इसके डज़ाइन

एक बार बुनियादी ब्लॉक का मसौदा तैयार कर लेने के बाद **व भन्न** प्रकार के गले बनाना संभव हैं।

किसी भी प्रकार का गला बनाने के लिए गर्दन के केंद्र बिंदु से सामने के केंद्र की तिरछे रूप से गर्दन की गहराई की माप लेना आवश्यक है। (गले की माप ए)

वर्गाकार, ग्लॉस गले, स्वीट हार्ट गले की लंबाई के लिए एक सीधी रेखा में और गले की चौड़ाई के लिए सामने के केंद्र से उस बिंदु तक मापा जाता है। (गले की माप बी)

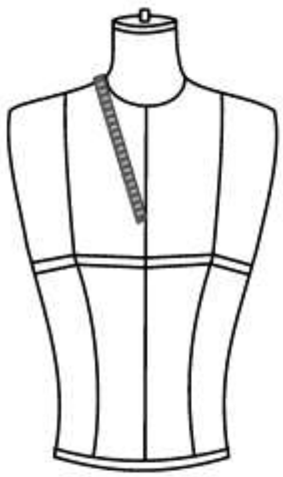

Neckline measurement A

गले की माप ए

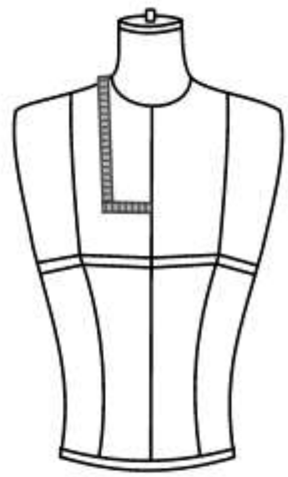

Neckline measurement B

गले की माप बी

5.3.1 गला बनाते समय ध्यान में रखे जाने वाले बिंदु

1. अगर एक गले को सामने से चौड़ा किया जाता है, तो पीछे भी ऐसा किया जाना जरूरी है।

2. एक ही समय में सामने और पीछे दोनों के लिए गहरा गला बनाने से बचने की कोशिश करें। अगर कोई गले के आगे और पीछे दोनों तरफ से गहरा रखने का फैसला करता है तो ऐसी स्थिति में सामने के केंद्र पर आसानी के लिए 1/2 इंच की बढ़त रखी जानी चाहिए।

3. जो माप तिरछे लिए जाते हैं उन्हें नमूने पर तिरछे रूप से चिह्नित किया जाना चाहिए और सीधे ली जाने वाली माप को सीधे चिह्नित किया जाना चाहिए।

4. घुमावदार गले के लिए, सामने और पीछे के केंद्र पर दोनों तरफ और कंधे के स्तर पर हमेशा 1/4 इंच की बढ़त रखें।

5.4 गले के आकार की विभिन्न संभावनाएं

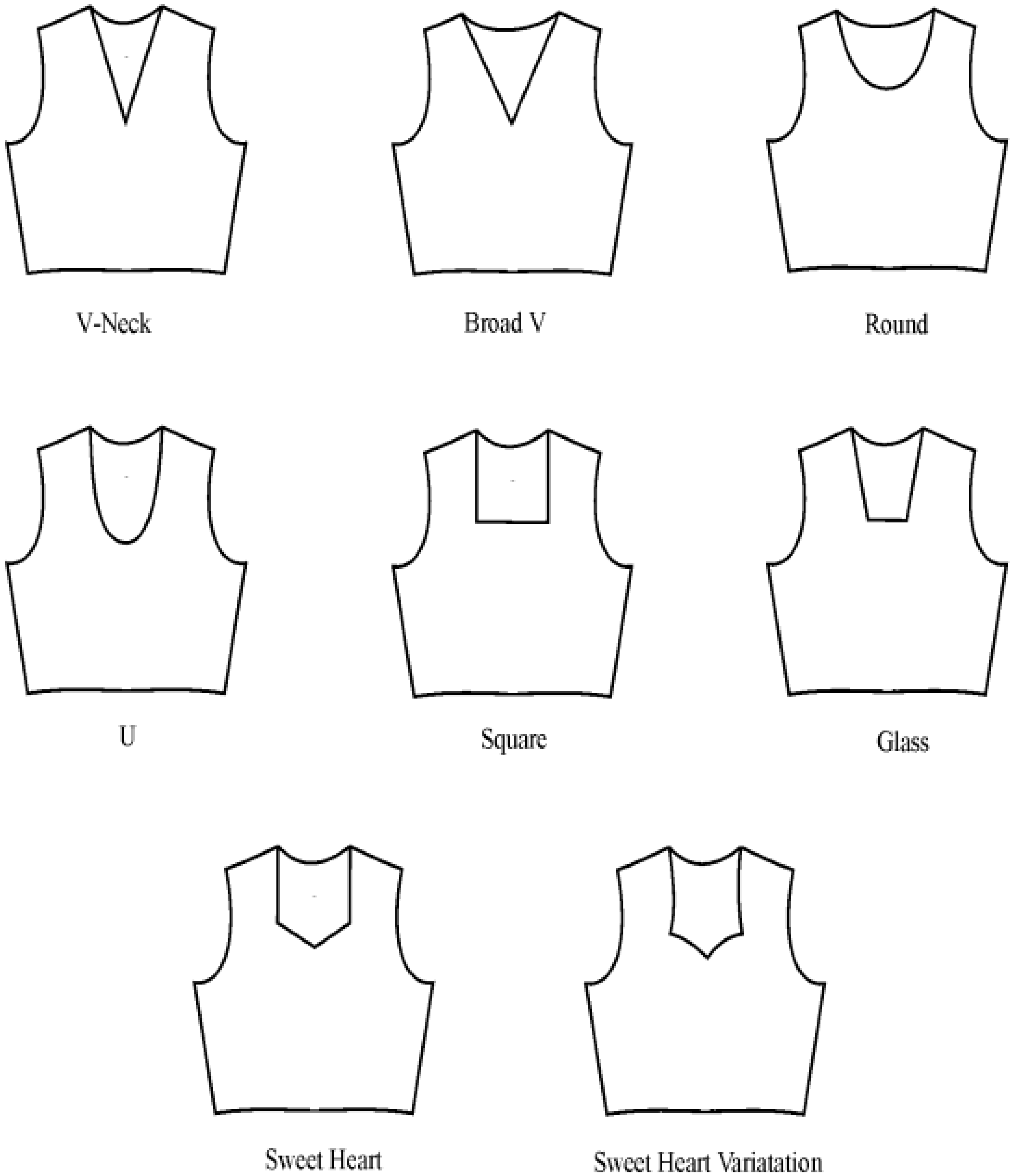

वी–गला

चौड़ा वी

गोल

यू

चौकोर

ग्लॉस

स्वीट हर्ट

स्वीट हर्ट की विभिन्नताएं

5.5 गले का परिष्करण

एक परिधान में गले की रेखा को एक कॉलर या फेसिंग अथवा पाइपिंग जैसे एक अलग परिष्करण के साथ समाप्त किया जा सकता है, गले को एक आकार में काटे जाने के कारण इसमें पर्याप्त खिंचाव होता है इसलिए इसे ठीक से सुरक्षित करने की जरूरत होती है। गले की रेखा पहनने वाले के चेहरे को भी एक आधार देती है इसलिए इसकी तरफ अत्यधिक ध्यान जाता है। झुकाव या आकार दोनों प्रकार से काटी गई फेसिंग दुनिया भर में सभी प्रकार के कपड़ों में प्रचलित हैं, हालांकि, पाइपिंग का आम तौर पर केवल भारतीय परिधानों विशेष रूप से साड़ी ब्लाउज में प्रयोग किया जाता है।

पाइपिंग कपड़े की एक झुकाव युक्त 1¼" (इंच चौड़ी पट्टी है और इसे खींचने के बाद गले की सिलाई की रेखा पर जोड़ा जाता है। पाइपिंग को तुरपाई या मशीन की सिलाई से पूरा किया जाता है। यह तैयार कपड़े के सामने की तरफ लगभग (से $^1/_8$" - $^1/_4$" इंच चौड़ी होती है। यह ब्लाउज और अन्य भारतीय कपड़ों के लिए परिष्करण का एक लोकप्रिय प्रकार है।

फेसिंग दो प्रकार की होती हैं –झुकाव युक्त फेसिंग और आकार फेसिंग।

झुकाव युक्त फेसिंग**:** पाइपिंग की तरह कपड़े की एक पट्टी है, लेकिन इसे बिना खींचे गले से जोड़ा जाता है। एक उलटी तरफ पूरी तरह से समाप्त हो जाती है।

आकार युक्त फेसिंगः आकार युक्त फेसिंग को गले के आकार के अनुसार काटा जाता है और सामने की तरफ जोड़ा जाता है तथा इसके बाद पूरी तरह से अंदर घुमा दिया जाता है। प्रत्येक डिजाइन के लिए फेसिंग की चौड़ाई में भिन्नता होती है लेकिन आम तौर पर 1½" चौड़ी होती है।

सारांश

अध्याय के इस भाग में निम्न विषयों को शामिल किया गया हैः

1. भारतीय परिधान का अवलोकन।

2. साड़ी ब्लाउज और सिलाई को पूरा करने की प्रक्रिया।

3. एक साड़ी ब्लाउज के आस्तीन का पैटर्न।

4. बिना आस्तीन के साड़ी ब्लाउज का पैटर्न

5. विभिन्न प्रकार के गले की डिजाइन और उनके लिए पैटर्न

6. फेसिंग और पाइपिंग के साथ गले का परिष्करण।

अभ्यास

1. विभिन्न पारंपरिक भारतीय परिधानों की तस्वीरें एकत्र करें और इस जानकारी को अपनी स्क्रैप बुक में बनाए रखें। क्या आप उस राज्य या क्षेत्र की पहचान कर सकते हैं जिससे यह मूल रूप से संबंधित हो सकती हैं?

2. आज के डिजाइनरों द्वारा डिजाइन किए गए विभिन्न भारतीय परिधान की तस्वीरें एकत्र करें और इन विभिन्न परिधानों और डिजाइनरों के नाम लिखें। क्या यह जानकारी आपके स्क्रैपबुक में है। आप इन डिजाइनों के लिए पैटर्न बना सकते हैं।

3. विभिन्न प्रकार के गलों की तस्वीरें एकत्र करें और इस जानकारी को अपने स्क्रैप बुक में बनाए रखें। इन गलों के पैटर्न बनाने की कोशिश करें।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

क. परंपरागत रूप से भारतीय महिलाएं ...., ..., ... सूट पहनती हैं।

ख भारतीय पैटर्न निर्माताओं ने ...... मसौदा तैयार करने की कला में ....की है।

ग. प्रत्यक्ष मसौदा तैयार करने में विधि में पैटर्न .... माप के लिए काटा जाता है जबकि ब्लॉक विधि में पैटर्न .... माप के लिए बनाए जाते हैं।

घ. भारत में पैटर्न दर्जी के द्वारा अंतिम .... पर.......... किए जाते हैं।

ङ. प्रत्यक्ष मसौदा में परिधान एक व्यक्ति के...... को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा सकता है.... ...... व्यक्ति और परिधान में काफी .... संभव है।

च. .... चूड़ीदार पायजामा और .... के पैटर्न बनाने की विधि ...... लिंग के लिए एक जैसी है।

छ. ....बलाउज शरीर पर .... की तरह फिट बैठता है।

ज. बाँह के छेद (आर्म होल) का डार्ट शीर्ष से कम से कम .... होता है।

झ. साड़ी ब्लाउज के आस्तीन की .... ऊंचाई .... रखी जाती है ताकि आस्तीन में गतिविधि करने के लिए अधिकतम......... .. .. जगह उपलब्ध हो सके।

ञ. एक बिना आस्तीन के ब्लाउज में .... स्तर पर ..... जाओ।

ट. यह सुनिश्चित करने के लिए कि गला एक बिंदु पर समाप्त नहीं होता........ चोली के .... पर जाएं।

ठ. एक गले को सामने से गहरा करते समय गले को .... और..... पीठ पर .... नहीं है।

ड. एक .... गला एक फ्रांसीसी वक्र का उपयोग कर तैयार किया जाता है

ढ. ...... फेसिंग .... वांछित टुकड़े के पैटर्न को .... रखते हुए कट जाता है।

ण. किसी भी प्रकार का गला बनाने के लिए गर्दन के .... से सामने के केंद्र की तिरछे रूप से गर्दन की ....की माप लेना आवश्यक है।

5.6 चोली ब्लाउज

चोली ब्लाउज एक ऊपरी परिधान है जो शरीर पर दूसरी त्वचा की तरह फिट बैठता है और मूल परिधान को सहायता प्रदान करता है। परंपरागत रूप से महिलाएं चोली ब्लाउज के साथ कोई अधोवस्त्र नहीं पहनतीं और फिर भी उसे पहनने में आराम महसूस करती हैं। पारंपरिक पैटर्न में चोली या कप को झुकाव पर कट जाता है जिसे विभिन्न आकार के वक्षों पर फिट करने के लिए खिंचाव दिया जाता है और वक्ष को आराम देने के लिए सामने के केंद्र पर सिकुड़नें होती हैं। इसमें समर्थन देने के लिए वक्ष के नीचे एक पट्टी होती है जिसे लंबाई में दानों पर काटा (जो खिंचती नहीं है) जाता है।

एक चोली ब्लाउज के आधुनिक संस्करण में एक चोली टुकड़ा और एक कमरबंद होता है, लेकिन यह अपेक्षित सहायता प्रदान नहीं करता। इसलिए इसके नीचे पहनने वाले वस्त्र का उपयोग बंद नहीं किया जाता है। चोली ब्लाउज पारंपरिक साड़ी ब्लाउज की अपेक्षा अधिक फिट बैठता है। छोटे वक्ष वाली महिलाएं विपरीत पाइपिंग के साथ वक्ष की सीवन को उभारती हैं और कभी कभी कप के दो भागों को अलग– अलग कपड़ों से बनाया जाता हैं।

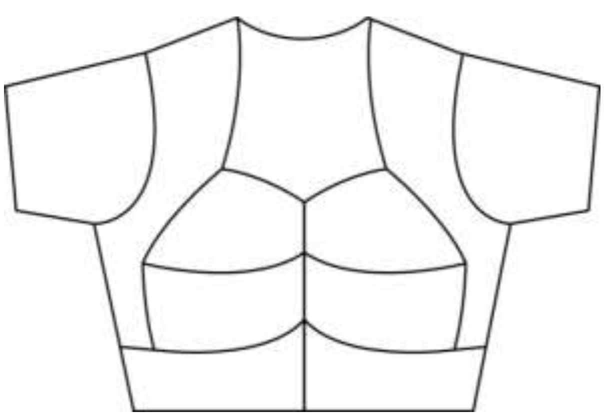

5.7 सलवार कमीज

सलवार कमीज सूट का परंपरागत रूप से उत्तर भारत और मुख्य रूप से पंजाब में इस्तेमाल किया जाता है, जो मुगल प्रभाव का परिणाम है। शुरू में सूट को भारत के कुछ दक्षिणी राज्यों में लोगों द्वारा पंजाबी के रूप में जाना जाता था और अब यह धार्मिक, राज्य और आय की सीमाओं के पार एक स्वीकृत अखिल भारतीय पोशाक बन गया है, इतना कि यह कई मूल्यों में असंख्य डिजाइनों और ब्रांडों के साथ पहनने के लिए तैयार रूप में आसानी से उपलब्ध है। प्रत्येक राज्य और क्षेत्र की अपनी विविधता और इस परिधान की अपनी शैली है।

5.7.1 सलवार

सलवार अर्थात् सेट के निचले हिस्से को उत्तर भारत में पुरुषों और महिलाओं, दोनों के द्वारा पहना जाता है, हालांकि, आधुनिक भारत में इसका उपयोग कुछ समुदायों के पुरुषों तक ही सीमित है। महिलाएं दैनिक आधार पर इसका उपयोग करती हैं, क्योंकि यह शरीर के निचले हिस्से के लिए सबसे अधिक आरामदायक वस्त्रों में से एक है, जिसमें शारीरिक काम, बैठने या फर्श पर बैठना और यहां तक सोने में भी पर्याप्त आरामदायक है।

परिधान को अच्छा लटकाव और ड्रेप देने के लिए सलवार के निचले छोर को कड़ा किया जाता है। पारंपरिक सलवार में, पूर्ण कमर होती थी, जिसे कूल्हे के माप के डेढ़ गुना आकार में काटा जाता था और सामान्य आकार में भी काटा जा सकता था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एक आकार अधिकांश महिलाओं को फिट आ सके और वजन के बढ़ने या घटने के कारण शरीर में होने वाले परिवर्तन को ढक सके। इसे एक डोरी से बांधा जाता है, इसमें कपड़े की एक बड़ी राशि से निपटने के लिए एक विशेषज्ञता की आवश्यकता थी और इसका आधुनिक संस्करण एक बेल्ट के रूप में आता है, जिसे एक व्यक्ति के कूल्हे की माप के अनुपात में काटा जा रहा है।

सलवार को बुनियादी ज्यामितीय आकृतियों से बनाया जाता है, जिसमें कपड़े की चौड़ाई का उपयोग किया जाता है जिससे कपड़े का अपव्यय न हो। इसके अलावा सलवार के डिजाइन में समझदारी से पैटर्न रखने और कपड़े की विविधताओं की विभिन्न चौड़ाई का उपयोग करना संभव है, जैसे कि पटियाला सलवार की डिजाइन में अधिक चौड़ाई के कपड़े का उपयोग होता है, साइड पैनल या कली 45 इंच की चौड़ाई वाले कपड़े पर काटी जाती है, एक पेशावरी सलवार पटियाला सलवार की दोहरी चौड़ाई के साथ काटी जाती है।

पारंपरिक विधि से एक सलवार के लिए 2.5 मीटर कपड़े की आवश्यकता होती है

सलवार

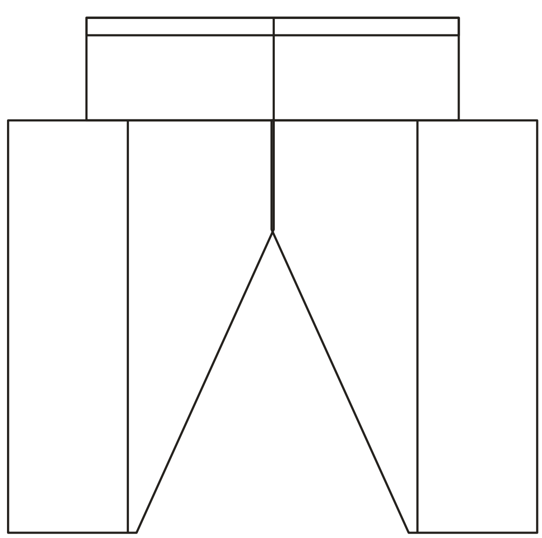

5.7.2 चूड़ीदार पायजामा

पारंपरिक रूप से चूड़ीदार पायजामा एक बहुत ही रोचक ढंग से काटा जाता है। कपड़े को मोड़ कर सिला जाता है और एक थैले का आकार बनाया जाता है जहां पूरा कपड़ा एक दाने पर झुका हो इस प्रकार चूड़ीदार बहुत अच्छी तरह से फिट हो सकता है और फिर भी पहनने वाले को हिलने–डुलने में आराम देता है। इस विधि में साढ़े पाँच फुट की औसत ऊंचाई, की एक वयस्क महिला के लिए, 36 इंच की सामान्य चौड़ाई के केवल 1.75 मीटर कपड़े की आवश्यकता होती है।

पायजामे के आधुनिक संस्करण को आधी लंबाई में कपड़े के दो तहों से काटा जाता है और फिर इसे तिरछा तह करके काटा जाता है।

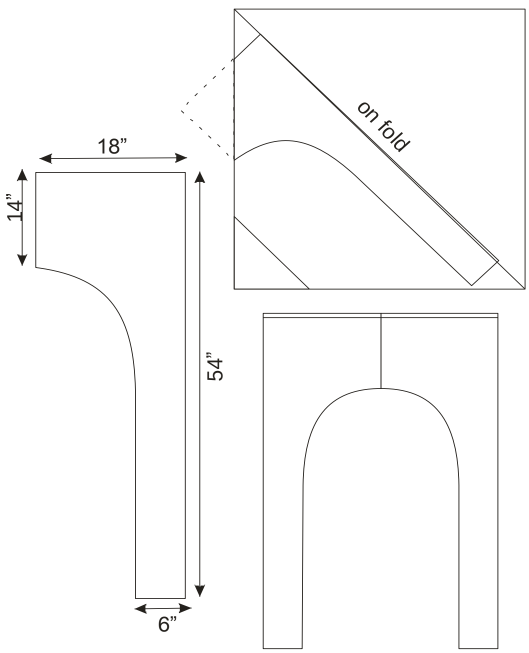

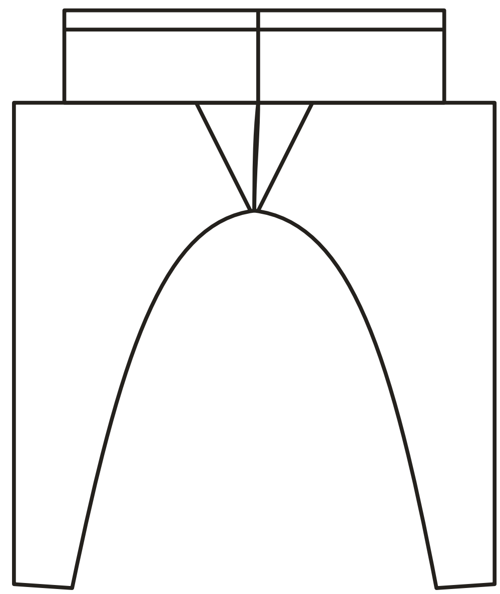

5.8 शरीर के ऊपरी हिस्से के वस्त्र

5.8.1 कमीज

सूट के ऊपरी आधे हिस्से को कमीज कहा जाता है, यह सलवार पर पहना जाने वाला एक लंबा टॉप है। पारंपरिक कमीज साड़ी ब्लाउज का एक लंबा संस्करण है। हालांकि, वैश्विक फैशन के रुझान और आधुनिक महिलाओं की जरूरतों के प्रभाव के साथ कमीज ने 21 वीं सदी में 60 के दशक में कम लंबाई के तंग फिटिंग से 90 के दशक के लंबे ढीले तम्बू से एक व्यक्तिपरक लंबाई तक कई रूप बदले हैं। यह वैश्विक रुझानों के अनुसार अपना रूप बदलती है, इस सदी की शुरुआत के बाद से पिछले कुछ वर्षों से यह विभिन्न अवतारों में नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय रैंप पर भी दिखाई दी है।

पारंपरिक रूप से सलवार के साथ पहने जाने वाली कमीज की प्रवृत्तियों में आधुनिक भारतीय महिलाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप बदलाव आया है, इसके आधुनिक संस्करणों को चूड़ीदार ढीली पतलून, पतलून, लेगिंग और जींस के साथ मिलाया गया है।

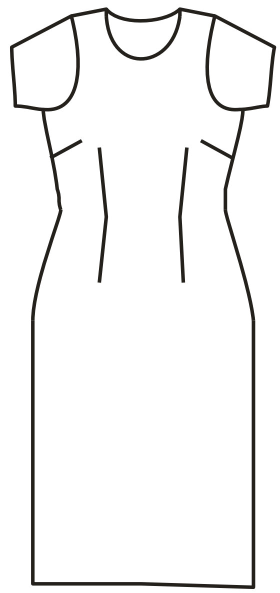

पारंपरिक कमीज

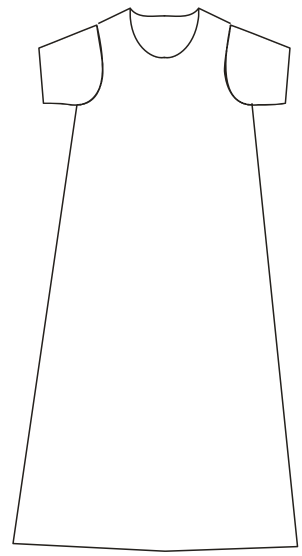

एक लाइन कमीज

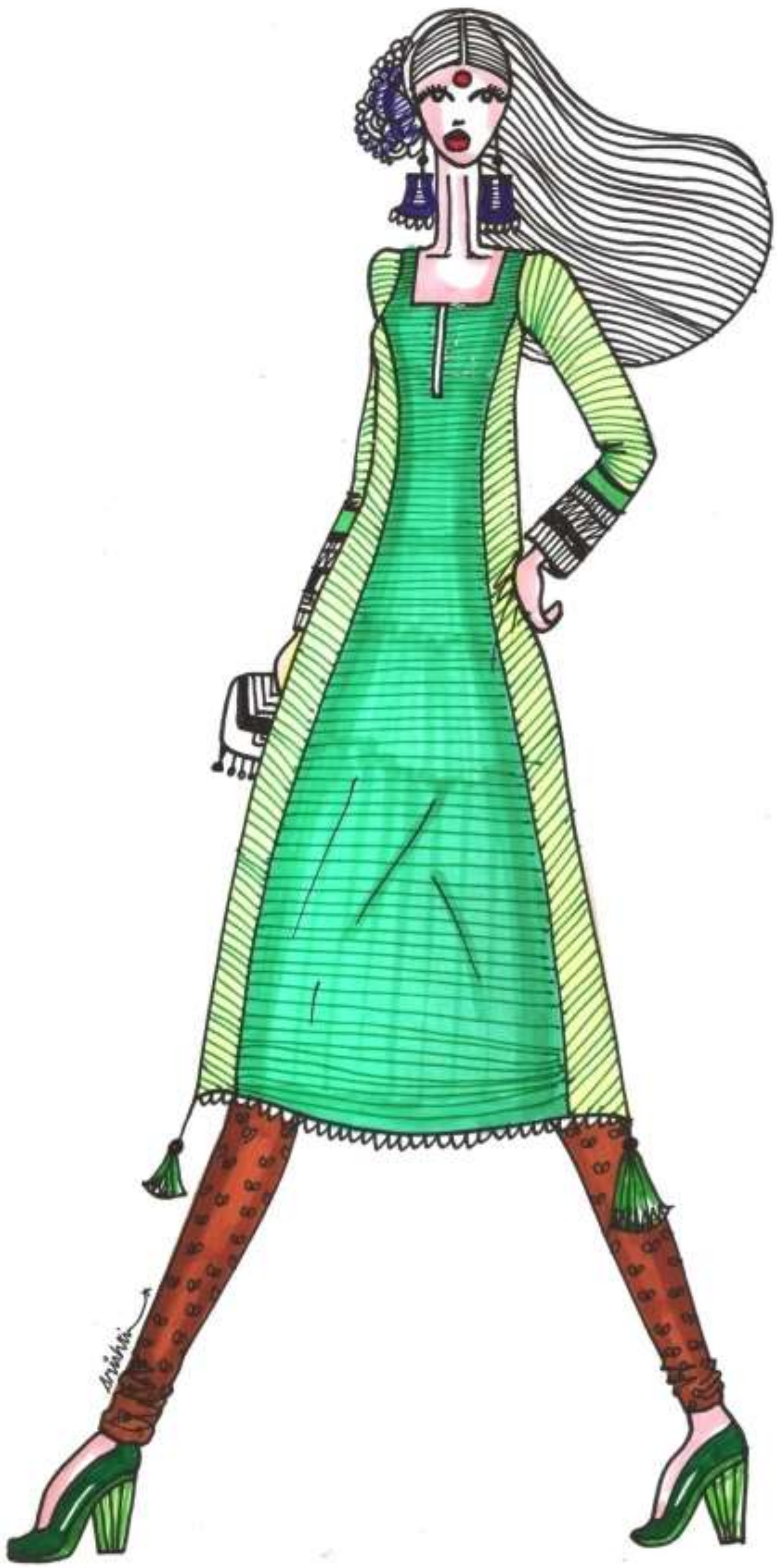

5.8.2 कलीदार कुर्ता

5.8.2 कलीदार कुर्ता

कलीदार कुर्ता एक आरामदायक परिधान और एक दिलचस्प पैटर्न है। पैटर्न ज्यामितीय आकृतियों से बना है। केवल छाती/वक्ष, कुर्ते की लंबाई और आस्तीन **की** लंबाई का मापन आवश्यक है। पारंपरिक कुर्ते को मोड़ पर केंद्र पैनल के साथ काटा गया है। कुर्ते की कलियों या साइड पैनलों को सलवार के साइड पैनलों के समान तरीके से काटा जाता है। आस्तीनों में एक सीधा बाँह का छेद (आर्म होल) होता है और गतिविधियों में आसानी के लिए पारंपरिक रूप से आस्तीन और कली के बीच एक वर्ग जुड़ा होता है।

कलीदार कुर्ता के डिजाइनों में भोपाली कुर्ता, जामा, अंगरखा आदि शामिल हैं, जो इन दिनों अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं और उन सभी को कलीदार **कुर्ते** के बुनियादी सिद्धांत पर काटा जाता है। अगर पैटर्न को काटने वाला कलीदार नमूने की बारीकियों को समझता है तो उनके बदलावों को काटना आसान होगा।

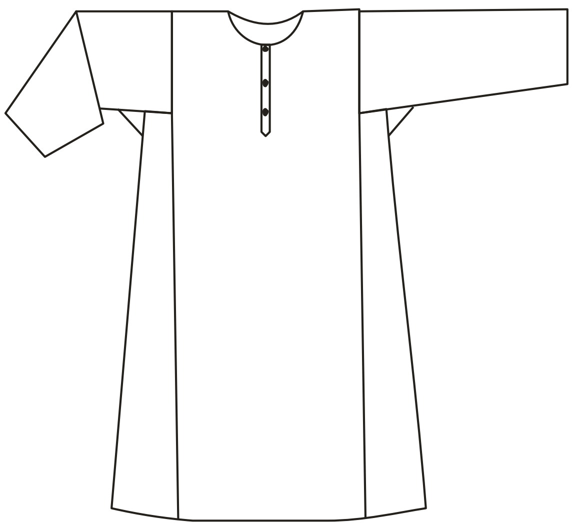
Kalidar Kurta

कलीदार कुर्ता

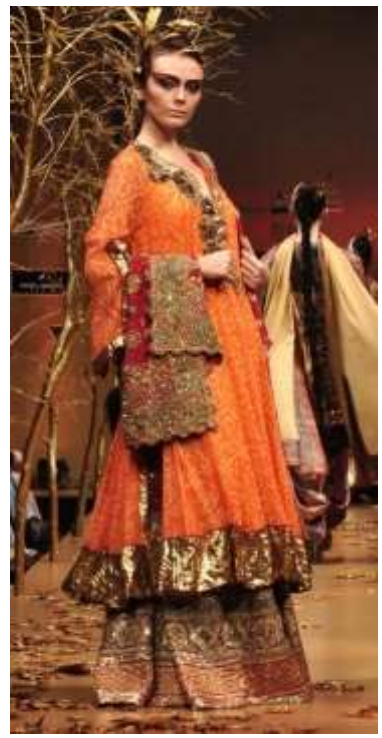

दो कली कुर्ता

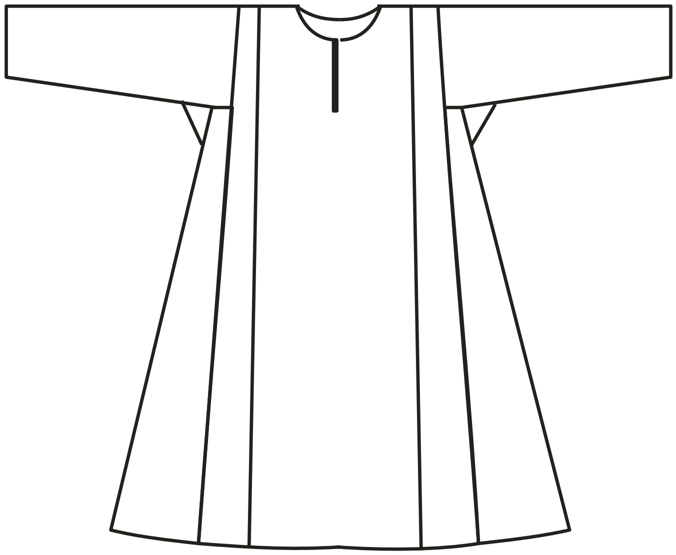

रितु बेरी द्वारा कलीदार कुर्ते का रूपांतर

दो क ल कुर्ता

दो कली कुर्ता कलीदार कुर्ते की एक अन्य लोकप्रिय भिन्नता है, जिसमें एक कली या पैनल कंधे से शुरू होता है

रितु बेरी द्वारा कलीदार कुर्ते का रूपांतर

कुर्ते में कमर के स्तर से शुरू होने वाली कई कलियाँ हैं।

कुर्ते के विभिन्न प्रकार

सारांश

अध्याय में निम्न विषयों को शामिल किया गया है:

1. महिलाओं के पहनने के पारंपरिक भारतीय परिधान।
2. विभिन्न प्रकार के साड़ी ब्लाउज।
3. भारतीय वस्त्र सलवार और चूड़ीदार पायजामा के अलग प्रकारों का विभाजन।
4. शरीर के ऊपरी वस्त्र कमीज और कुर्ते के विभिन्न प्रकार।

अभ्यास

1. विभिन्न पारंपरिक भारतीय परिधानों की तस्वीरें एकत्र करें और अपने स्क्रैप बुक में इस जानकारी को बनाए रखें। क्या आप उस अवधि की पहचान कर सकते हैं जिससे वे संबंधित हैं।

2. आज के डिजाइनरों द्वारा डिजाइन किए गए विभिन्न भारतीय परिधान की तस्वीरें एकत्र करें और इन पोशाकों और डिजाइनरों को नामित करें। क्या यह जानकारी आपके स्क्रैपबुक में है। क्या आप इन डिजाइनों के लिए पैटर्न बना सकते हैं।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

क .... ब्लाउज एक .... पोशाक को समर्थन प्रदान करता है और एक साड़ी ब्लाउज की अपेक्षा ....फिट होता है।
ख. पारंपरिक पैटर्न में चोली या .... पर काटी .... वक्ष के आकार पर ... .. की जाती है।
ग.सलवार निचले .... का वस्त्र है, यह .... और ...... दोनों द्वारा पहना जाता है, तथापि, आधुनिक भारत में इसका उपयोग कुछ समुदायों के ...... तक सीमित है।
घ.सलवार कमीज सूट का पारंपरिक रूप से .... भारत, मुख्य रूप से पंजाब में प्रयोग किया जाता है, जो............ प्रभाव का परिणाम है।
ङ.परिधान को .... और बढ़िया......... में सक्षम करने के लिए .... सलवार के .... को कड़ा किया जाता है। ।
च............बुनियादी .... आकारों से बना एक परिधान है जिसमें ...... कपड़े ..... का उपयोग नहीं किया जाता है।
छ.पारंपरिक कमीज ...... का एक लंबा संस्करण है। ।
ज.कुर्ता पैटर्न .... आकार से बना है, केवल ... कुर्ता और ....लंबाई ...... का माप लेने की आवश्यकता होती है।
झ.पारंपरिक कुर्ते को मोड़ पर...... पैनल के साथ काटा गया है। कुर्ते की कलियों या साइड पैनलों को .... के समान तरीके से काटा जाता है।
ञ.कलीदार कुर्ता के डिजाइनों में ......, ..., ...आदि शामिल हैं, जो इन दिनों अंतरराष्ट्रीय लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं।
ट.कुर्ते को .... एक वर्ग माप .... के साथ .... एक इंच जोड़ कर काटा जाता है।
ठ.पारंपरिक रूप से ...... एक बहुत ही रोचक ढंग से काटा जाता है, कपड़े को .... सिला जाता है और एक थैले का आकार बनाया जाता है जहां पूरा कपड़ा एक दाने पर झुका हो।
ड. पायजामे के आधुनिक संस्करण को आधी ....में कपड़े के ...... से काटा जाता है और फिर इसे ....तह करके काटा जाता है।
ढ. पारंपरिक काटने विधि में एक चूड़ीदार के लिए केवल ....मीटर कपड़े की आवश्यकता थी और आधुनिक विधि द्वारा...... मीटर लगता है।
ण. एक सलवार या चूड़ीदार के फीते में कूल्हे की माप का .... और आसानी के लिए .... जोड़ा जाता है।